BRDU International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2455-278X
(A peer reviewed and refereed Journal)
Vol.10, Issue.III, March 2024, Pc : BRDU-2403007

सआदत हसन मंटो की लेखनी में सामाजिक विमर्श

प्रीति कुलहरी, शोध विद्यार्थी

पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, ईमेल: preetikulhari@gmail.com

यह लेख मंटो की उन कहानियों की समीक्षा करेगा जो सामाजिक मुद्दों, मानवीय मूल्यों, आम लोगों की भावनाओं और विभाजन की क्रूर प्रक्रिया को दर्शाती हैं। मंटो अपने लेखन में क्रांतिकारी और अपरंपरागत दृष्टिकोण रखते हैं। मंटो ने सामाजिक भ्रांतियों को उजागर किया है और सत्ता के असंतुलित शक्ति केंद्रों को अनावृत किया है । उन्होंने शोषितों और हाशिये पर खड़े लोगों के लिए आवाज उठाई। साहित्य में ये किरदार पहले इतने स्पष्ट रूप से नजर नहीं आए हैं। मंटो का काल भारतीय उपमहाद्वीप में असामान्य काल था। मंटो उन कुछ लेखकों में से एक थे जिन्होंने विभाजन की प्रक्रिया करीब से देखी। उनके विषयों के चयन और लेखन शैली ने उन्हें न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में बल्कि दुनिया भर में लोकप्रिय बना दिया। उनकी कहानियाँ कई देशी और विदेशी भाषाओं में अनुवादित हैं। उनका साहित्य आज भी लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं और हमारे समय में भी यह प्रासंगिक है। मंटो की कहानियाँ अक्सर वेश्याओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जानी जाती हैं, लेकिन यह लेख उनके लेखन में चित्रित अन्य प्रमुख सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करेगा।

"बीसवीं शताब्दी में दुनिया में दो बड़े गद्यकार हुए हैं, जिन्होंने बिना उपन्यास लिखे भी खुद को दिग्गज साहित्यकार मनवाया है। उनमें से एक है अंतोन चेखव और दूसरे सआदत हसन मंटो । "

मंटो का जन्म 11 मई 1912 को पंजाब के लुधियाना जिले में एक कश्मीरी मुस्लिम परिवार में हुआ था। मंटो काल में भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। उन्होंने भारतीय समाज में होने वाली सभी उथल-पुथल का अवलोकन किया। उनके पिता मौलवी गुलाम हुसैन एक सत्र न्यायाधीश थे। युवावस्था में उन्होंने और उनके दोस्तों ने मिलकर एक नाटक समूह बनाया , लेकिन अपने पिता की नाराजगी के चलते उसे बंद करना पड़ा। अपने पिता की मृत्यु के बाद, वह अपनी माँ के साथ अकेले रह गए थे। पिता की मृत्यु के बाद मंटो को आर्थिक मुसीबतो का सामना करना पड़ा। उनकी सारी बचत उनकी बहन की शादी में खर्च हो गई। सुरमा कहानी में मंटो ने खुलकर कुप्रथा दहेज़ के बारे में लिखा है। दहेज़ की शुरुआत एक फ़ौरी सहायता के रूप में की गयी थी लेकिन वर्तमान के शिक्षित समाज में इस कुप्रथा ने अपनी जड़े और मजबूत कर ली है ।

"फ़हमीदा की जब शादी हुई तो उसकी उम्र उन्नीस बरस से ज़्यादा नहीं थी। उसका जहेज़ तैयार था। इसलिए उसके वालिदैन को कोई दिक़्क़त महसूस न हुई। पच्चीस के क़रीब जोड़े थे और ज़ेवरात भी, लेकिन फ़हमीदा ने अपनी माँ से कहा कि वो सुर्मा जो ख़ासतौर पर उनके यहां आता है, चांदी की सुर्मेदानी में डाल कर उसे ज़रूर दें। साथ ही चांदी का सुर्मचो भी।"मंटो ने अपनी कहानियो के जरिये उन सभी मुद्दों को उठाने का प्रयास किया जिनसे आमजन प्रभावित था ।

मंटो ने खुद कई बार माना कि वह उर्दू में पारंगत नहीं थे, लेकिन उन्होंने आम लोगों की भाषा, उनके दुख-दर्द को उर्दू में खूबसूरती से पिरोया । उन्होंने कई फ्रेंच और रूसी कहानियों का उर्दू में अनुवाद किया। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अमृतसर में पूरी की। इस दौरान अमृतसर में कई क्रांतिकारी गतिविधियाँ हुईं। इन कार्यों का असर मंटो की जिंदगी पर पड़ा। मंटो स्वभाव से बेचैन थे। मंटो ने अपनी पहली कहानी, "तमाशा"

के साथ एक लेखक के रूप में शुरुआत की। यह कहानी 1919 के जलियावाला बाग हत्याकांड पर आधारित थी। वह 1931 में हिंदू सभा कॉलेज में शामिल हुए। 1932 में भगत सिंह को फाँसी दे दी गई। इसी समय मंटो के पिता की मृत्यु हो गई। 1932 में पिता की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी मंटो पर आ गई।

सन् 1947 में विभाजन की अमानवीय प्रक्रिया संम्पन्न हुई। विभाजन से लेखक को सदमा लगा और उनके लेखन पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी कहानी "टोबा टेक सिंह" देश के विभाजन पर एक व्यंग्य है। यह मानसिक रूप से बीमार लोगों के पाकिस्तानी आश्रयों से भारतीय आश्रयों में और भारतीय आश्रयों से पाकिस्तानी आश्रयों में आवाजाही को दर्शाती है। टोबा टेक सिंह की कहानी बताती है कि भारत और पाकिस्तान के अतार्किक विभाजन ने पागलों के दिमाग पर कैसा प्रभाव डाला, जब दोनों देशों ने अपने-अपने पागलों को भी विभाजित करने के बारे में सोचा।

अरित्रा चक्रवर्ती लिखती हैं, "कहानी विभाजन से पीड़ित लोगों के व्यवहार पैटर्न को पुनः प्रस्तुत करती है। कहानी लाहौर के एक मानसिक अस्पताल में घटित होती है । अस्पताल के कैदी विभाजन के युग की भावनाओं, कठिनाइयों और पीड़ा का प्रतीक हैं । कहानी के बारे में सबसे खास बात यह है कि यह सीधे तौर पर समाज को संबोधित किए बिना, उस पर दोषारोपण करती है। टोबा टेक सिंह के बारे में अनोखी बात यह है कि, विभाजन के बारे में अन्य कहानियों या उपन्यासों के विपरीत, यह कहानी हिंसा या हिंसा का चित्रण नहीं करती है।"

सन् 1948 में मंटो अपनी पत्नी और बेटियों के साथ पाकिस्तान चले गये। पाकिस्तान में भी उनके लिए जिंदगी आसान नहीं थी। उस समय पाकिस्तान की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ भारत से भिन्न नहीं थीं और आर्थिक स्थितियाँ तो और भी बदतर थीं। लेकिन ये प्रतिकूल परिस्थितियाँ उनके लेखन को नहीं रोक सकीं, वे उसी भावना और साहस के साथ लिखते रहे। मंटो देश और समाज की राजनीति से भली-भांति परिचित थे। उन्हें विश्व राजनीति की सभी प्रमुख समस्याओं और यहाँ तक कि छोटी से छोटी स्थानीय सामाजिक समस्याओं की भी अच्छी जानकारी थी।

कहानी "नया क़ानून" मंगू कोचवान नामक एक स्वतंत्रता-प्रेमी व्यक्ति के बारे में है। वह रिक्शा चालक है. मंगू पढ़ा-लिखा नहीं है, फिर भी उसे देश -दुनिया की जानकारी है, जो वह अपने यात्रियों की बातें सुनकर जुटाता है। एक दिन उसे पता चला कि एक नया कानून आने वाला है, जिससे भारत में ब्रिटिश शासन ख़त्म हो जायेगा। इसी खुशी में वह कानून लागू होने वाले दिन एक अंग्रेज से लड़ता है और जेल चला जाता है। यह कहानी लोगों की अपेक्षाओं और कानून के क्रियान्वयन के बीच के अंतर को दर्शाती है। मंगू के चरित्र के माध्यम से लेखक उन लोगों को प्रतिबिंबित करता है जो सोचते हैं कि नया कानून सब कुछ बदल देगा।

हैरिस खालिक अपने लेख "नैरेटिव आर्क: नया क़ानून" में लिखते हैं: "यह सच नहीं है कि पिछले 70 के दशक में आम आदमी के लिए कुछ भी नहीं बदला है। हालाँकि, ये छोटे बदलाव एक बड़ी राजनीतिक कीमत पर आए हैं। अंग्रेजों ने आम जनता को आजादी का भ्रम देकर छोड़ दिया। वास्तविक सत्ता राज की संस्थाओं - नौकरशाही, न्यायपालिका, सेना और पुलिस के साथ-साथ उपाधि धारकों, जमींदारों, आदिवासी सरदारों और धनी व्यापारियों को हस्तांतरित कर दी गई।"

स्वतंत्रता संग्राम के बारे में हम जो कुछ भी पढ़ते हैं वह ज्यादातर इतिहास की किताबों में है, ये किताबें नेताओं और महत्वपूर्ण घटनाओं का महिमामंडन करती हैं। लेकिन मंटो की कहानियाँ सामान्य लोगों के जीवन को चित्रित करती हैं जो मर गए, बलात्कार किए गए, विस्थापित हो गए और भ्रमित हो गए। "खुदा की कसम" कहानी विभाजन के दुष्परिणामों को दर्शाती है। एक महिला जिसने विभाजन के दौरान अपनी बेटी को खो दिया और पागल हो गई और सदमे में अंततः मर गई। उनकी रचनाओं की एक विशेषता समाज की कटु वास्तविकता का चित्रण है। "गुरुमुख सिंह की वसीयत" कहानी में मंटो ने धार्मिक बर्बरता को दिखाया है । मंटो ने दिखाया किस प्रकार धार्मिक उन्माद ने लोगो के मध्य आपसी प्रेम भाव और मेल मिलाप को कुचल दिया गया ।

मंटो समाज में लेखक की भूमिका से अच्छी तरह परिचित थे और यह भी जानते थे कि वह किस बारे में लिख रहे हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से केवल समस्याओं को उजागर किया और उन्हें ठीक करने का प्रयास नहीं किया। इस संबंध में, उन्होंने कहा: "हम बीमारियों की रिपोर्ट

करते हैं, लेकिन हम औषधालय संचालित नहीं करते हैं ।" मंटो का मानना था कि लेखक का काम समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर करना है, न कि उनकी समस्याओं का समाधान करना। उन्होंने अपने पाठकों से अपेक्षा की कि वे समस्याओं के बारे में जानें, उनका समाधान खोजें और उनमें सुधार करें, न कि यह अपेक्षा करें कि मंटो इसके बारे में लिखना बंद कर दे।

मंटो के लेखन की भरसक आलोचना की गयी । मंटो ने 100 से ज्यादा कहानियां लिखी हैं। उनकी कहानियों में एक अलग आकर्षण देखने को मिलता है। केवल स्पष्ट यौन सामग्री लिखने के लिए आलोचकों द्वारा मंटो की निंदा की गई थी। लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि यह सामग्री बड़े विषयों का हिस्सा है। मंटो की कहानियाँ हमेशा लोकप्रिय रहीं, लेकिन वे शर्मनाक कहानियों के रूप में लोकप्रिय रहीं। लोग इन्हें खुलेआम पढ़ने से डरते थे।

18 जनवरी, 1955 को उनका निधन हो गया। मंटो का 40 साल की उम्र में निधन हो गया । मंटो आज भी अपने पाठकों के दिलों में जिंदा हैं, लेकिन मंटो के साथ कई दिग्गज कहानियां भी दफन हो गई।

मंटो ने मौजूदा सामाजिक मानदंडों को फिर से परिभाषित किया। उन्होंने वास्तविकता लिखी और पाठक को इसके बारे में सोचने का अवसर प्रदान किया। मंटो का सामाजिक मुद्दों को उठाने का तरीका उनके समकालीनों से अलग था। उन्होंने समस्या के बारे में सीधे तौर पर नहीं लिखा। उन्होंने अपनी कहानियों में इस तथ्य का सृजन किया कि यह वास्तव में अस्तित्व में है, और पाठकों को इसके बारे में सोचने के लिए छोड़ दिया। रचनात्मकता के लिए उनकी प्रेरणा उनकी पीड़ा में थी।

"आर्टिस्ट लोग" इस कहानी में आर्टिस्ट की ज़िंदगी की पीड़ा को बयान किया गया है। जमीला और महमूद अपनी कला को बचाने के लिए कई प्रयास करते हैं, लेकिन कला प्रेमियों की कमी के कारण कला को बचाए रखना मुश्किल हो जाता है। हालात से परेशान हो कर आर्थिक सुरक्षा के लिए एक फैक्ट्री में काम करना शुरू कर देते हैं, लेकिन उन दोनों को यह काम एक कलाकार की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल लगता है और इसलिए वो एक दूसरे को अपनी मजबूरियों और अपने काम से बारे नहीं बताते हैं।

कहानी "रिश्वत" देश में नौकरशाही और भ्रष्टाचार पर एक व्यंग्य है। कहानी एक युवक के जीवन के कठिन अनुभवों पर आधारित है। जब उसने स्नातक की डिग्री प्राप्त की, तो उसके पिता ने उसे उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने का इरादा किया। इसी बीच, उसके पिता को जुए की लत लग गई और जुए में सब कुछ हारने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। आदमी खाली हाथ दुनिया से लड़ने लगा। वह जहां भी काम की तलाश में गया, लोग उससे रिश्वत की मांग करने लगे। आख़िरकार, वह परेशान हो गया और उसने भगवान को एक पत्र लिखा, जिसमें रिश्वत के तीस रुपये भी शामिल थे, जो उसने कड़ी मेहनत से कमाए थे। उनका पत्र संयोगवश एक समाचार पत्र के संपादक के पास पहुंच गया, जहां से उन्हें दो सौ रुपये मासिक वेतन पर काम करने के लिए आमंत्रित किया गया। मंटो ने समाज में भ्रष्टाचार की समस्या को हास्यपूर्ण ढंग से चित्रित किया। किसी देवता को रिश्वत देना मामले की गंभीरता और तीव्रता को दर्शाता है।

एक अन्य कहानी में मंटो ने मिलावट के बारे में लिखा है । मिलावट सार्वभौमिक है और यह समाज में सदैव विद्यमान रही है। मंटो ने अपनी कहानी "मिलावट" में इसका ख़ूबसूरती से चित्रण किया है। यह एक ईमानदार आदमी की कहानी है । उसने अपने जीवन में कभी किसी को धोखा नहीं दिया। वह अपने जीवन से खुश था। एक दिन उसने शादी करने के बारे में सोचा लेकिन उन्हें शादी में धोखा मिला। इसके बाद वह जहां भी गया, उसे धोखा मिलता रहा। फिर उसने लोगों को धोखा देने का भी फैसला किया। आख़िरकार ज़िंदगी से तंग आकर उसने मरने की सोची और आत्महत्या के लिए उसने जो ज़हर खरीदा था वह भी मिलावटी था, जिसके कारण वह बच गया। मंटो ने इसी तरह व्यंग के माध्यम से समाज की बुराइयों को उकेरा है।

हमारे समाज में ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जो मौजूद तो हैं, लेकिन अक्सर छुपी रहती हैं, ऐसी चीज़ों के बारे में लोग खुलकर बात नहीं करते, मंटो अपने किरदारों के ज़रिए इन छुपी बातों को उजागर करते हैं। "तपिश कश्मीरी" कहानी में मुख्य पात्र की प्रेम रुचि के बारे में बताया है। मुख्य

किरदार एक अधेड़ उम्र का आदमी है, पहले उसे एक जवान लड़के में दिलचस्पी थी और बाद में उसे एक जवान लड़की से प्यार हो जाता है। उस समय हमारे समाज में ऐसी बातों पर अक्सर चर्चा नहीं होती थी। लेकिन मंटो ने उसके बारे में खुलकर लिखा है ।

जब भी हम महिलाओं के मुद्दे को चित्रित करने वाले लेखक की बात करते हैं तो मंटो का नाम सबसे ऊपर होता है। "उसका पति" कहानी में मंटो न केवल महिला मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं बल्कि समाज की वर्ग और जाति व्यवस्था को भी चित्रित करते हैं। यह शोषण, मानवीय गरिमा और नैतिकता के ह्रास की कहानी है। । एक भट्ठा मालिक का होनहार बेटा सतीश, गांव की एक गरीब लड़की रूपा को अपनी हवस का शिकार बनाकर छोड़ देता है। जब गांव वालों को उसकी गर्भावस्था के बारे में पता चला, तो रूपा के होने वाले ससुर ने उसकी मां का अपमान किया और रिश्ता खत्म कर दिया। मामले को सुलझाने के लिए नत्थू को बुलाया जाता है, जिसे बुद्धिमान माना जाता है। सब कुछ सुनने के बाद वह रूपा को सतीश के पास ले जाता है और उसे रूपा और उसके बच्चे की देखभाल करने के लिए कहता है लेकिन सतीश एक सौदा करने की कोशिश करता है जिसके कारण रूपा भाग जाती है और पागल हो जाती है। इस तरह का उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण हमेशा से ही हमारे समाज का हिस्सा रहा है ।

मंटो लोगों और समाज के व्यवहार को वैसा ही दिखाना चाहते थे जैसा वह मौजूद है। उन्होंने प्रमुख और ज्वलंत मुद्दों को चुना और उनके बारे में खुलकर लिखा। उन्होंने समाज का निष्ठापूर्वक चित्रण किया है, भले ही उन पर इसके लिए कई बार मामला दर्ज किया गया हो। इसीलिए प्रतिबंधों के बावजूद, वह अपने समय के सबसे अधिक पढ़े जाने वाले और सबसे अधिक चर्चित लेखक थे।उन्होंने मानव जाति की गहराई को उजागर करते हुए मानव जाति के लिए बेहतर भविष्य की आशा की है। मंटो की कहानियों में दर्शाई गई मार्मिक हकीकत ने लोगों को झकझोर कर रख दिया है। यह कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है क्यों की ये समस्याएं आज भी हमारे समाज में विद्यमान है ।

हम कह सकते हैं कि मंटो ने समाज के हर वर्ग के दर्द की गहराई से पड़ताल की और अपनी लेखनी से उसे सबके सामने लाया। उनकी कहानियों में पात्रों के दुख-दर्द को कलम से बखूबी उकेरा गया है। हम उनके चरित्रों और समाज में उनके अस्तित्व को नजरअंदाज नहीं कर सकते। हम इन कहानियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

मंटो ने सामाजिक सरोकारों को सबसे ऊपर रखा है। यह भी सत्य है कि ये कहानियाँ साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि हैं।मंटो लोगों और समाज के व्यवहार को वैसा ही दिखाना चाहते थे जैसा वह मौजूद है। उन्होंने प्रमुख और ज्वलंत मुद्दों को चुना और उनके बारे में खुलकर लिखा। उन्होंने समाज का निष्ठापूर्वक चित्रण किया है, भले ही उन पर इसके लिए कई बार मामला दर्ज किया गया हो। उन्होंने मानव जाति की गहराई को उजागर करते हुए मानव जाति के लिए बेहतर भविष्य की आशा की है। मंटो की कहानियों में दर्शाई गई मार्मिक हकीकत ने लोगों को झकझोर कर रख दिया है। वह हमारे समय के लिए महत्वपूर्ण है। प्रतिबंधों के बावजूद, वह अपने समय के सबसे अधिक पढ़े जाने वाले और सबसे अधिक चर्चित लेखक थे।

हम कह सकते हैं कि मंटो ने समाज के हर वर्ग के दर्द की गहराई से पड़ताल की और अपनी लेखनी से उसे सामने लाने का प्रयास किया। । उनकी कहानियों में पात्रों के दुख-दर्द को कलम से बखूबी उकेरा गया है। हम उनके चरित्रों और समाज में उनके अस्तित्व को नजरअंदाज नहीं कर सकते और उनकी कहानियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। मंटो ने सामाजिक सरोकारों को सबसे ऊपर रखा है। यह भी सत्य है कि ये कहानियाँ साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि हैं।

References

1. मंटो की 21 कहानियाँ । edited by वशिष्ठ डॉ आशीष, दिल्ली , कल्पना प्रकाशन , 2018.
2. सआदत हसन मंटो दस्तावेज़1। बलराज मेनरा और शरत दत्त । राजकमल प्रकाशन । नई दिल्ली । 1993 page 23

3. "सआदत हसन मंटो - कहानी." Rekhta, www.rekhta.org/stories/surma-saadat-hasan-manto-stories?lang=hi&pageId=07625832-BDEE-450E-8A13-1156F3DD68BC/&targetId=&bookmarkType=&referer=&myaction=&websiteId=0&sourceRef=. Accessed 16 Mar. 2024.
4. Chakrabarty, Aritra. "Manto, the Short Story Writer Who Chronicled India's Partition." *Culture Trip*, 13 June 2016, theculturetrip.com/asia/india/articles/manto-the-man-who-knew-the-truth/. Accessed 1 Apr. 2023
5. Khalique, Harris. "NARRATIVE ARC: NAYA QANOON." DAWN.COM, 29 July 2018, www.dawn.com/news/1423594. Accessed 12 Mar. 2024.
6. Manto My Love: Selected Stories of Saadat Hasan Manto. translated by Harish Narang, New Delhi, Sahitya Akademi, 2016.